अतिथि

व्यंक्टेश माडगुलकर
पुनर्कथनः कीर्ती रामचन्द्रा
चित्राँकनः सुजाता चोपड़ा

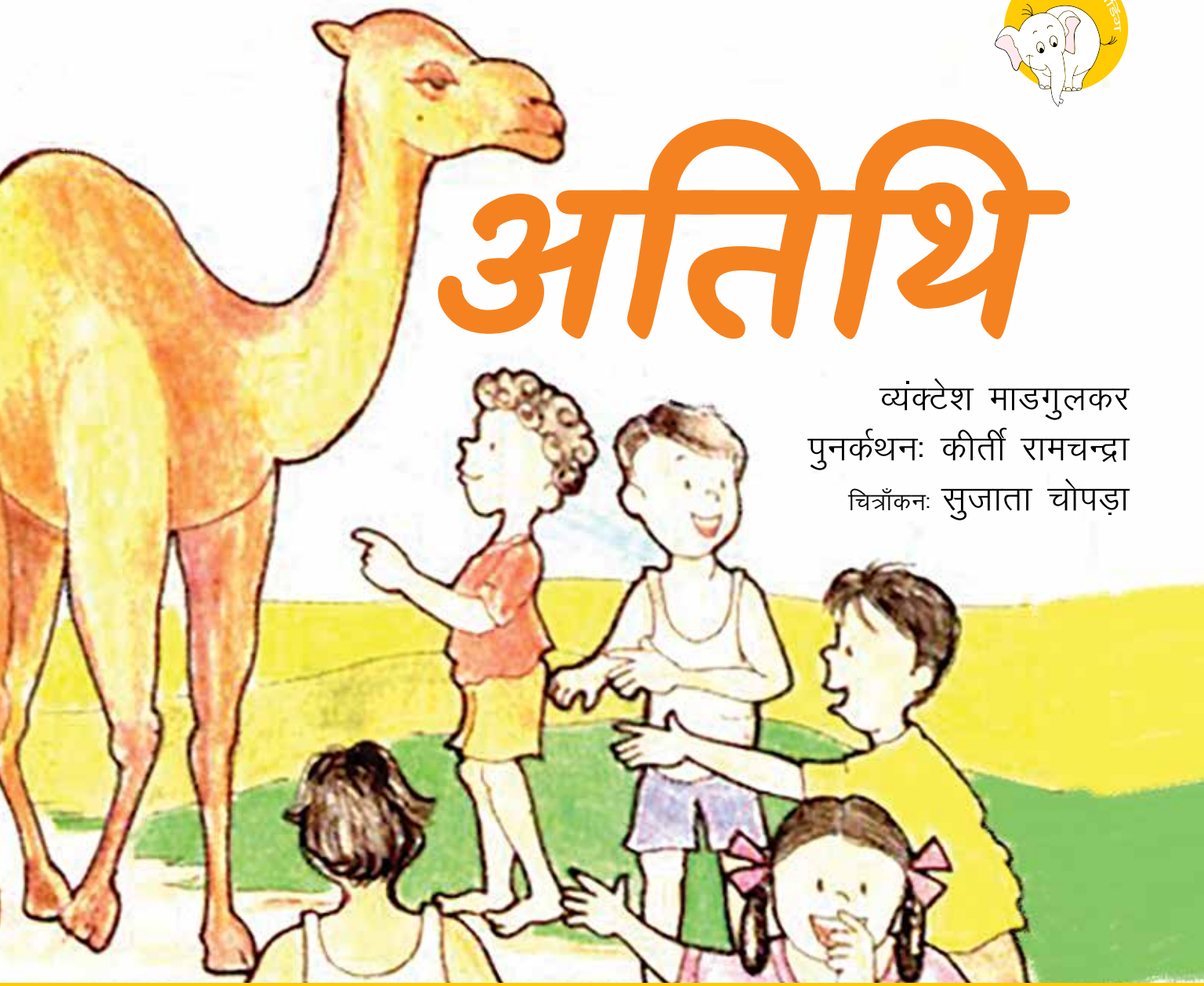

कथा की 300एम थिंकबुक

आषाढ़ का महीना था, हमारी वाड़ी
में बरसात का महीना।

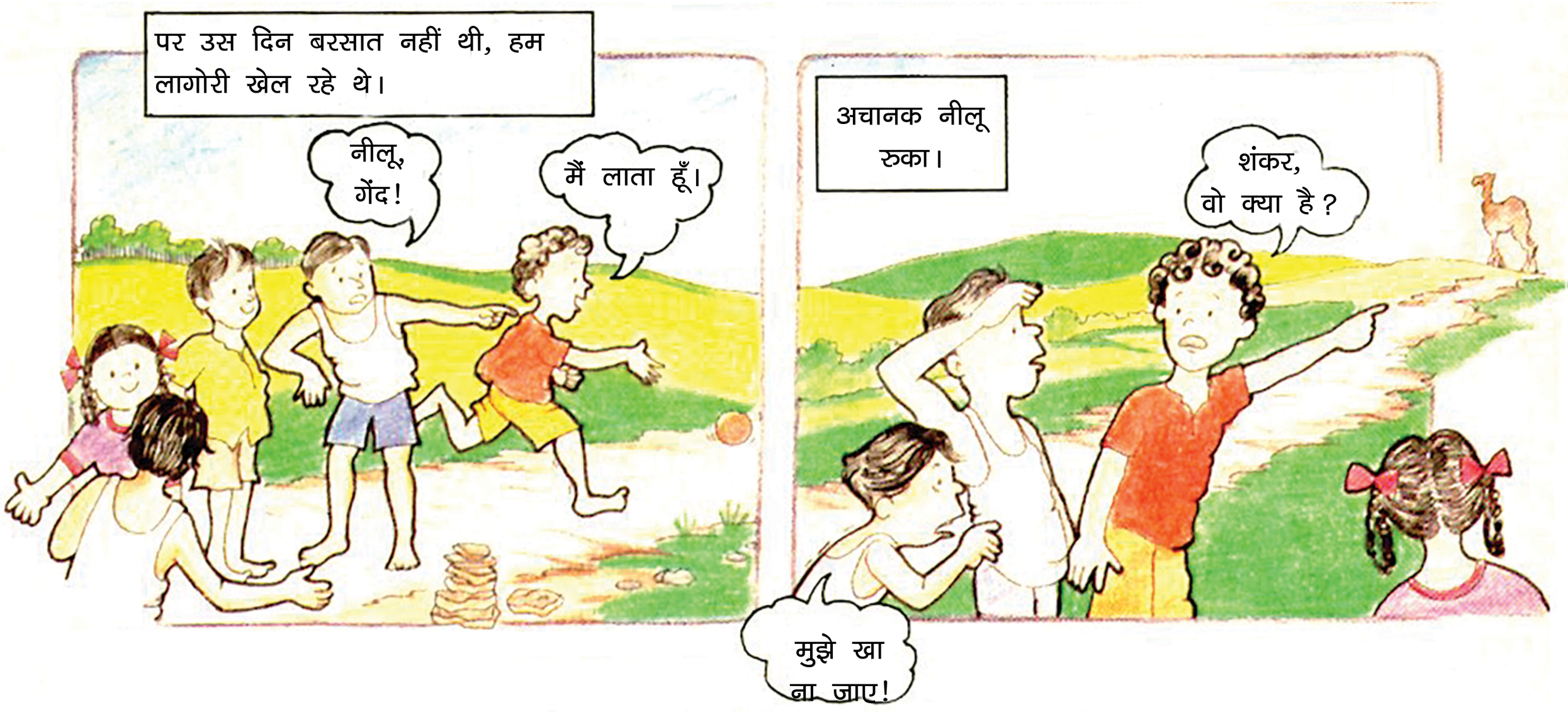
पर उस दिन बरसात नहीं थी, हम लागोरी खेल रहे थे।
नीलू, गेंद!
मैं लाता हूँ।
अचानक नीलू रुका।
शंकर, वो क्या है?
मुझे खा ना जाए!

जब वह पास आया तो ...
ऊँट!
कहीं ये सर्कस का ऊँट तो नहीं?
क्या ये हमें करतब दिखाएगा?

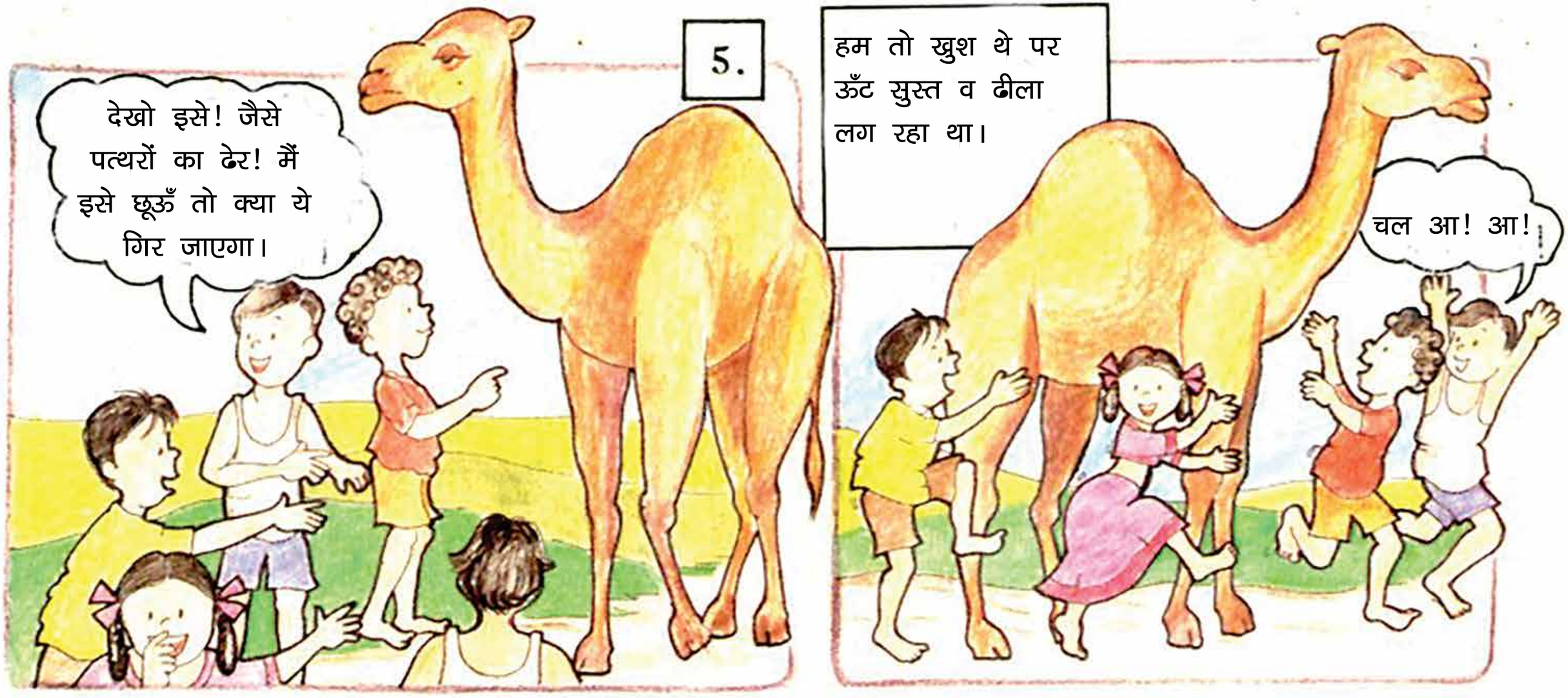
5.
देखो इसे! जैसे पत्थरों का ढेर! मैं इसे छूऊँ तो क्या ये गिर जाएगा।
हम तो खुश थे पर ऊँट सुस्त व ढीला लग रहा था।
चल आ! आ!

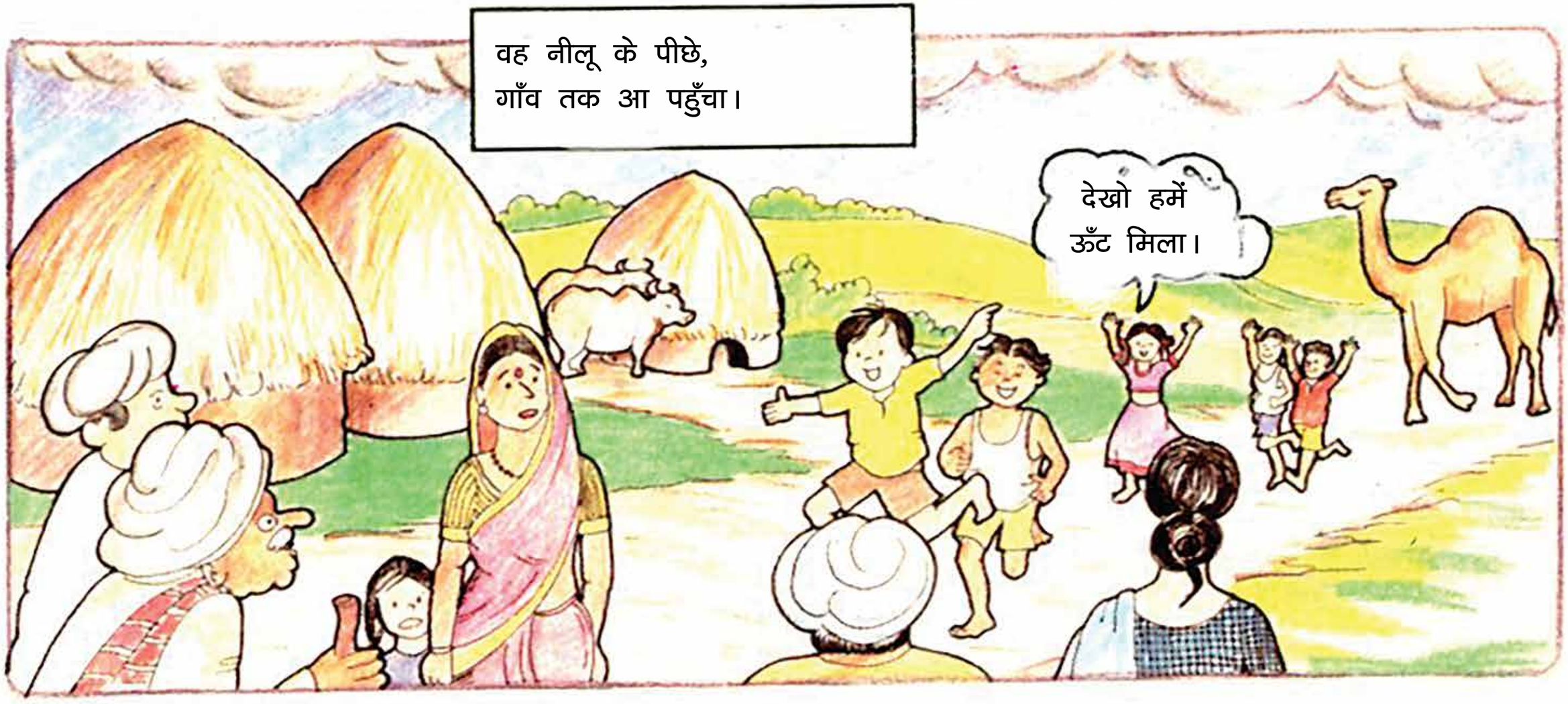
वह नीलू के पीछे,
गाँव तक आ पहुँचा।
देखो हमें
ऊँट मिला।

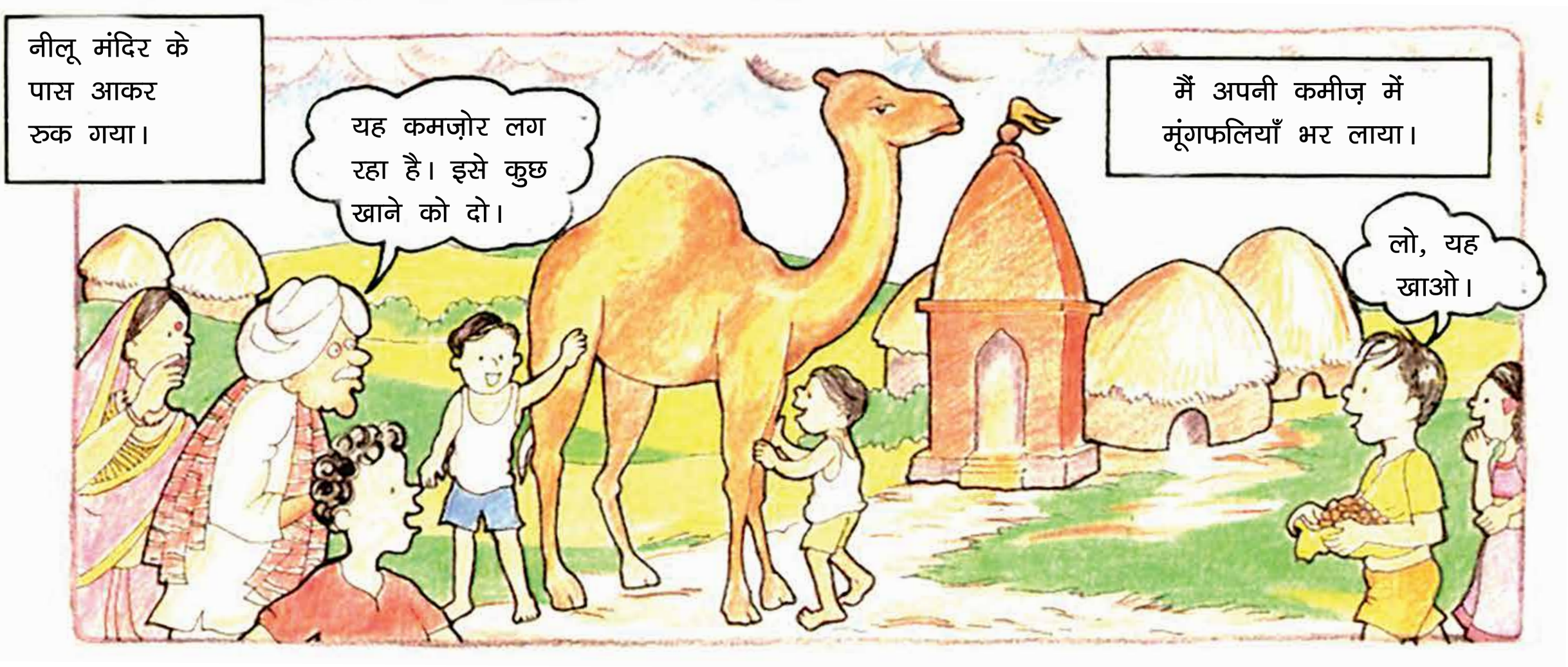
नीलू मंदिर के पास आकर रुक गया।
यह कमज़ोर लग रहा है। इसे कुछ खाने को दो।
मैं अपनी कमीज़ में मूंगफलियाँ भर लाया।
लो, यह खाओ।

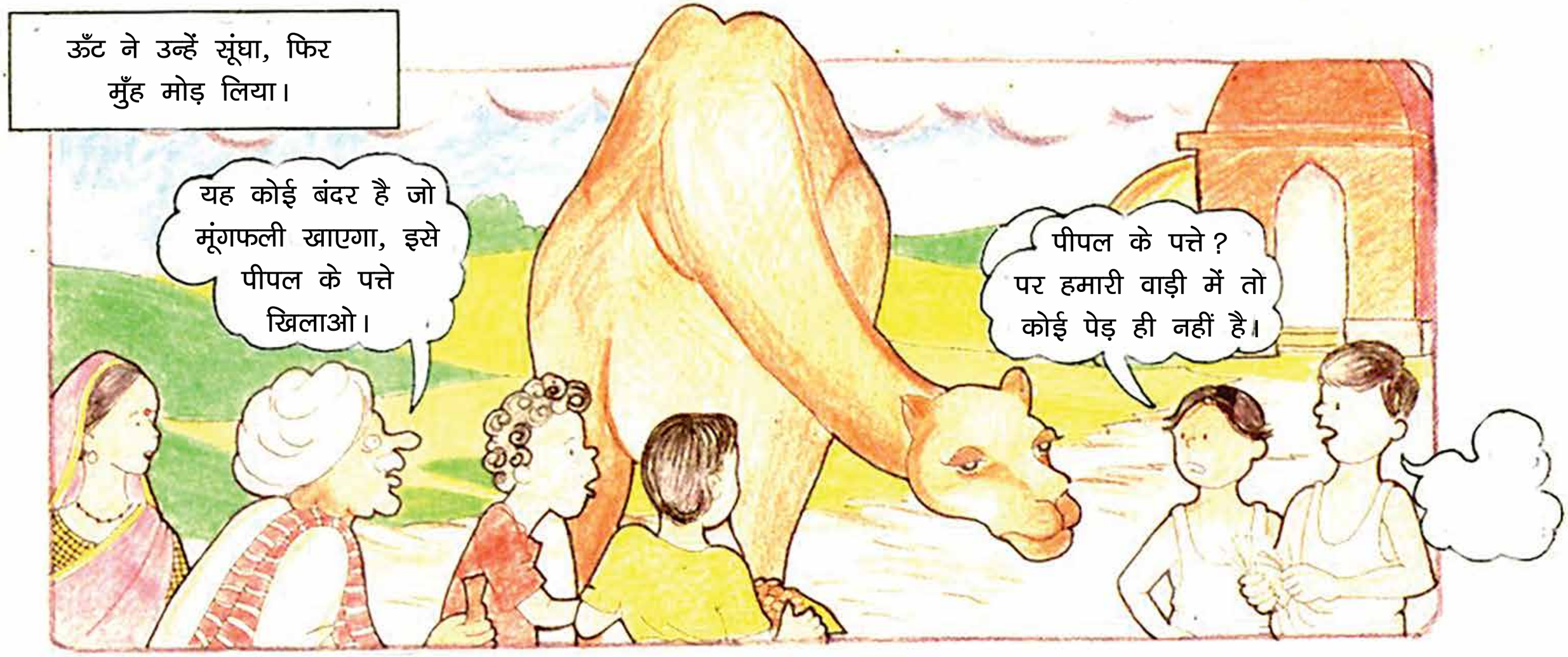
ऊँट ने उन्हें सूंघा, फिर मुँह मोड़ लिया।
यह कोई बंदर है जो मूंगफली खाएगा, इसे पीपल के पत्ते खिलाओ।
पीपल के पत्ते? पर हमारी वाड़ी में तो कोई पेड़ ही नहीं है।

लो, घास खाओ। ऊँट ने घास को सूंघा तक नहीं।
राजा बाबा, कुछ तो खा लो! पानी पियोगे?
जैसे ही नीलू ने यह कहा, बरसात शुरू हो गई।

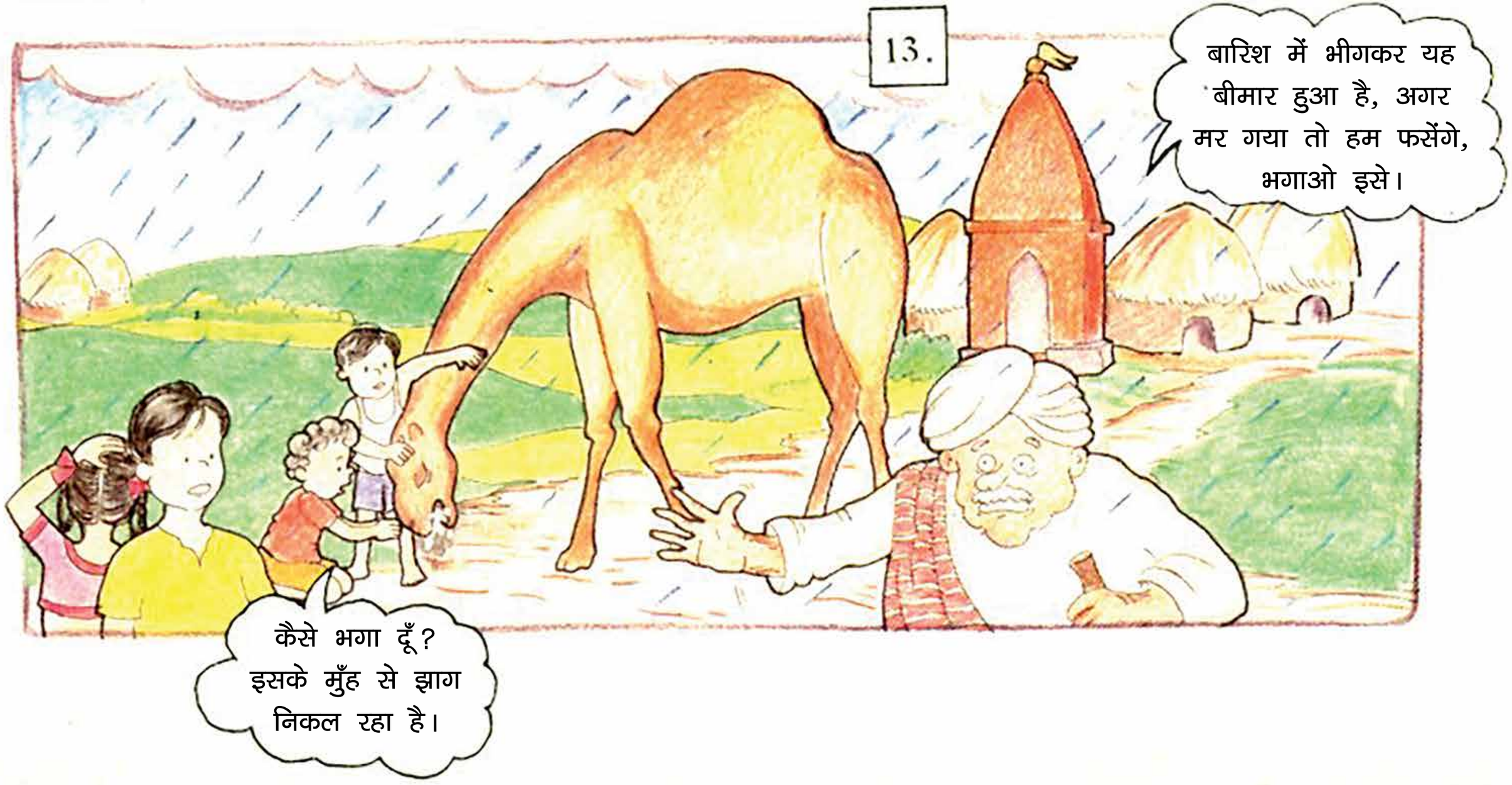
13.
बारिश में भीगकर यह बीमार हुआ है, अगर मर गया तो हम फसेंगे, भगाओ इसे।
कैसे भगा दूँ? इसके मुँह से झाग निकल रहा है।

बारिश थम गई थी। काँपता हुआ,
घबराकर ऊँट गाँव से बाहर चला गया।
हम उसके पीछे चल पड़े।

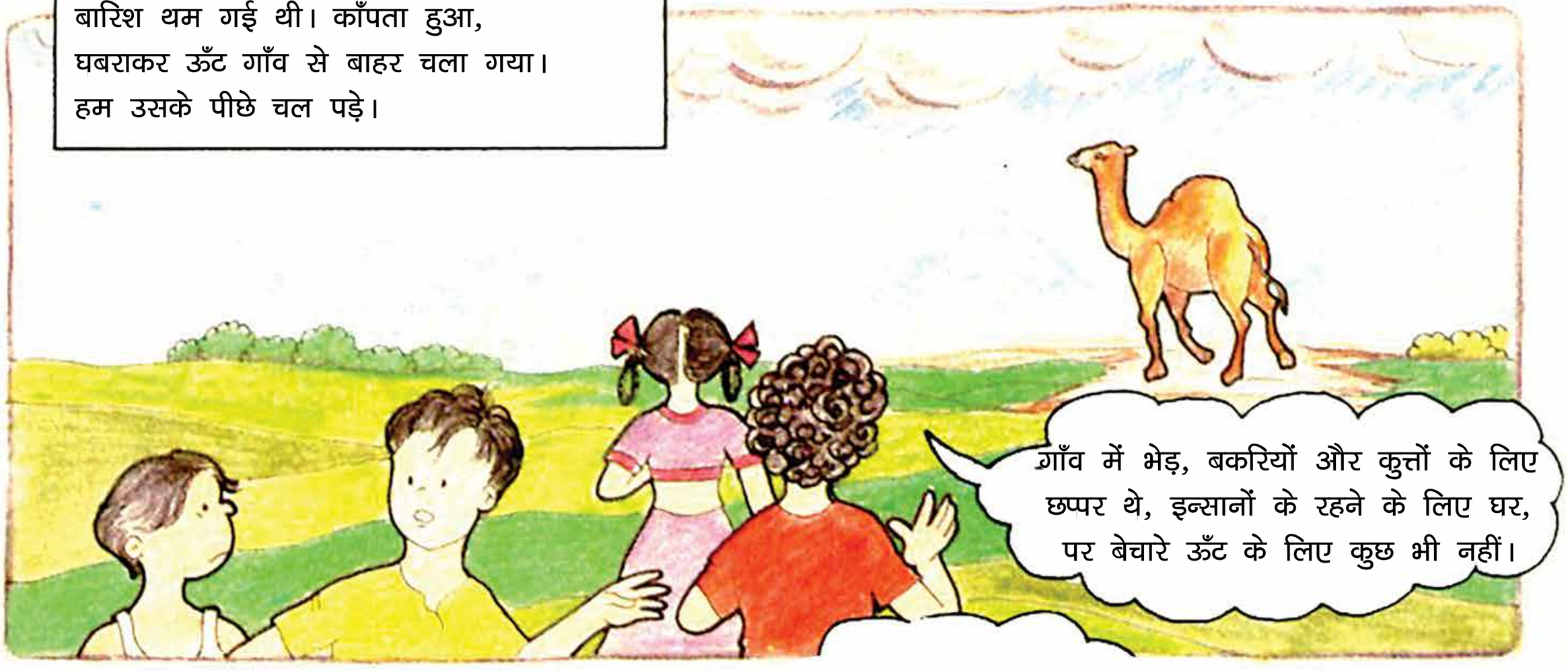

अचानक कटे हुए पेड़ की तरह ऊँट, धम्म! से ज़मीन पर गिर गया।
अरे, कोई कुछ तो करो!
यह काँप रहा है। काश! इसकी पोटली बनाकर मैं घर ले जा सकता।
इसकी आँखें देखो। क्या यह मर गया?
मैं रो पड़ा, बाकी साथी भी रोने लगे।

हम बहुत देर तक वहाँ बैठे रहे, कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

व्यंकटेश माडगुलकर (१९२७–२००१) अपने समय के प्रसिद्ध मराठी लेखक थे। वे अपने यथार्थवादी लेखन के लिए जाने जाते थे। उनके लेखन में दक्षिणी महाराष्ट्र के मानदेश के गाँवों का वर्णन होता था। उन्होंने विभिन्न प्रकार का लेखन किया, जैसे, ४० फिल्मों के लिए पटकथाएँ, कई लोक कथाएँ भी लिखीं। 'फिड्लर ऑन थे रूफ' का मराठी संस्करण बनाने का प्रयास भी उन्होंने किया। कई वन्यजीवों पर लिखी पुस्तकें भी उन्होनें अंग्रेजी से मराठी में अनुवादित कीं। उन्होंने अपनी यात्राओं पर, प्रकृति पर, और रिचर्ड बर्टन जैसे यात्रियों पर भी निबंध लिखे।

कीर्ति रामचंद्रा ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए किया है और उनके पास भाषा विज्ञान में एम.फिल की उपाधि भी है। भारत और कई अन्य देशों में उन्होंने अध्यापन भी किया है। उन्होंने 'विजन्स–रिविजन्स' का सम्पादन भी किया है।

सुजाता चोपड़ा एक कलाकार हैं। उन्हें बच्चों के लिए चित्रकारी करना पसंद है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © व्यंकटेश माडगुलकर
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह पुस्तकें कथा ने बहुत ध्यान और स्नेह के साथ बनायीं हैं। यह 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए हैं।

यह हमारे 'UntextBook Initiative' का हिस्सा हैं। बच्चों को पढ़ने का आनंद आये उसके लिए हम बेहतरीन साहित्य और कला का इस्तेमाल करते हैं।

अपने बच्चों के बिना शब्दों वाली किताबों से 1200 शब्दों वाली कहानियों की यात्रा कराएँ।

इसमें 3500 वर्ष पुराने साहित्य से कहानियाँ और कविताएँ हैं।

अपने बच्चों के साथ इन्हें पढ़ें। उनकी कल्पना को नयी उड़ान दें।

हमारे साथ '300 Million Citizens' Challenge' का हिस्सा बनिए। एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए जहाँ बच्चे आनंद से पढ़ें और समझें।
हमसे जुड़ें: 300m@katha-org
स्वयंसेवा के लिए: volunteer@katha-org
पर हमें लिखें

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।
यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।
अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

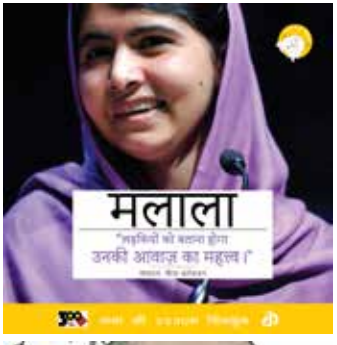

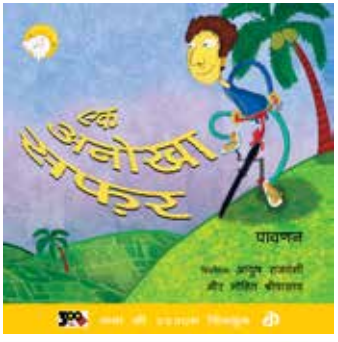

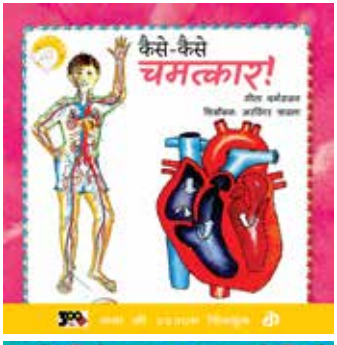

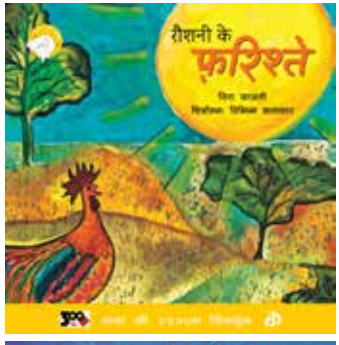

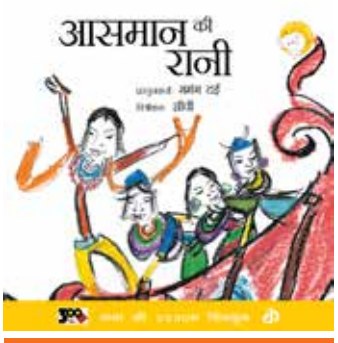

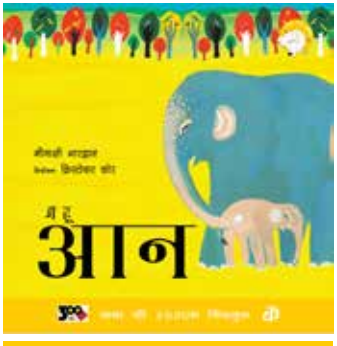

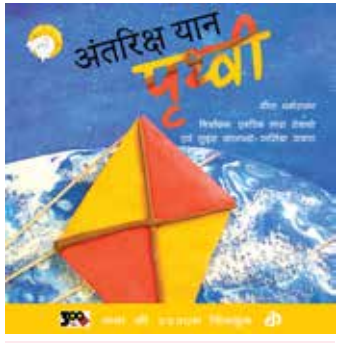

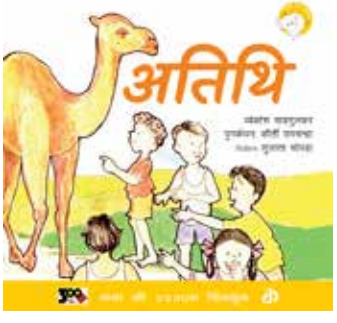

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx

इसकी ग्रीन श्रृंखला में